

3-युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-भाग १

अध्याय 1: प्राणवान् प्रतिभाओं की खोज

प्रश्न 1.1: प्राणवान प्रतिभा का क्या अर्थ है और यह सामान्य लोगों से किस प्रकार भिन्न होती है?

उत्तर 1.1: प्राणवान प्रतिभा का अर्थ है ऐसी विलक्षण क्षमता जो व्यक्ति के भीतर की 'प्राणाग्नि' से जागृत होती है। यह सामर्थ्यवान व्यक्तियों में सामान्य लोगों की तुलना में अधिक होती है, जिसे आत्मबल या संकल्पबल भी कहा जाता है। ऐसे प्रतिभावान लोग साहसिकता और सुव्यवस्था जैसे गुणों से अनुशासित होते हैं, जिससे सर्वतोमुखी प्रगति के द्वार खुल जाते हैं। वे कठिनाइयों से जूझते और मार्ग में आने वाले अवरोधों को दूर करते हुए आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 1.2: समाज में मनुष्यों को किन तीन मुख्य वर्गों में बाँटा गया है? संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर 1.2: मनुष्यों को तीन मुख्य वर्गों में बाँटा गया है। पहला है हीन स्तर का वर्ग, जो परावलम्बी होते हैं, दूसरों पर निर्भर रहते हैं, और अपनी स्वतंत्र चेतना से कुछ नहीं कर पाते। दूसरा वर्ग स्वार्थी प्रजाजनों का है, जो योग्य होते हुए भी अपनी क्षमताओं का उपयोग केवल लोभ, मोह, अहंकार की पूर्ति के लिए करते हैं और आदर्शों से प्रभावित नहीं होते। तीसरा वर्ग प्रतिभावान लोगों का है, जो भौतिक क्षेत्र में व्यवस्थाएँ बनाते हैं, बड़े कार्य करते हैं, नेतृत्व करते हैं, और सफलता प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 1.3: देव-मानव किन्हें कहा गया है और उनकी क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर 1.3: देव-मानव सबसे ऊँची श्रेणी के लोग हैं, जिन्हें महापुरुष भी कहते हैं। उनमें प्रतिभा भरपूर होती है, लेकिन वे उसका उपयोग आत्म परिष्कार और लोकमंगल जैसे उच्चस्तरीय उद्देश्यों के लिए करते हैं। वे अपनी निजी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को घटाकर बची हुई शक्ति को दूसरों की भलाई में लगाते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज के उत्थान और समस्याओं के समाधान का श्रेय पाते हैं और किसी देश की सच्ची सम्पदा माने जाते हैं।

प्रश्न 1.4: वर्तमान समय को 'युगसन्धि का समय' क्यों कहा गया है?

उत्तर 1.4: वर्तमान समय को विश्व इतिहास में अद्भुत और अभूतपूर्व 'युगसन्धि का समय' कहा गया है। इस समय में एक ओर महाविनाश का खतरा मंडरा रहा है, तो दूसरी ओर सतयुगी नवनिर्माण की आशाएँ भी जागृत हो रही हैं। यह विनाश और विकास का समन्वय काल है, जहाँ अंधेरे के साथ ब्रह्ममुहूर्त का आभास भी दिखाई देता है। ऐसे महत्वपूर्ण समय में प्रखर और प्राणवान व्यक्तियों को अपनी सही भूमिका निभानी होती है।

प्रश्न 1.5: इतिहास के कुछ उदाहरणों के माध्यम से उच्चस्तरीय प्रतिभाओं की भूमिका स्पष्ट करें।

उत्तर 1.5: इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जहाँ उच्चस्तरीय प्रतिभाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। त्रेता युग में राम के साथ हनुमान और अंगद जैसे रीछ-वानरों ने समुद्र पर सेतु बाँधा और लंका का विध्वंस किया, जबकि कोई राजा सहयोग करने नहीं आया। महाभारत में पांडवों के छोटे से समुदाय ने भगवान कृष्ण के सारथी बनने पर कौरवों की विशाल सेना को हराया। चाणक्य ने चंद्रगुप्त की प्रतिभा को पहचानकर उसे महान शासक बनाया। ये सभी उदाहरण दिखाते हैं कि समस्याओं का समाधान करने में प्रतिभाएँ ही प्रमुख होती हैं।

प्रश्न 1.6: किन परिस्थितियों में प्रतिभाओं की खोज, उभार और खरादने की आवश्यकता महसूस होती है?

उत्तर 1.6: प्रतिभाओं की खोज, उभार और खरादने की आवश्यकता तब महसूस होती है जब व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों स्तरों पर गंभीर समस्याएँ हों। आर्थिक, सामाजिक, मानसिक विभीषिकाओं और बढ़ती

गरीबी, बेरोजगारी, प्रदूषण जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए उच्चस्तरीय प्रतिभाएँ ही समाधान दे सकती हैं। ईश्वर भी अधर्म के विनाश और धर्म के संरक्षण का कार्य महामानवों के माध्यम से ही करता है।

अध्याय 2: विशिष्टता का नए सिरे से उभार

प्रश्न 2.1: 'समुद्र मन्थन जैसे युगसन्धि पर्व' का क्या अर्थ है और इसमें प्रतिभाओं की क्या भूमिका है?

उत्तर 2.1: 'समुद्र मन्थन जैसे युगसन्धि पर्व' का अर्थ है वर्तमान समय की गहन उथल-पुथल और चुनौतियों का दौर। जैसे समुद्र मन्थन से अमृत निकला था, वैसे ही इस युगसन्धि में प्राणवान प्रतिभाओं की अत्यधिक आवश्यकता है। उनकी भूमिका मानवीय गरिमा को अनिष्ट से बचाना और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए भगीरथ जैसा प्रचण्ड पुरुषार्थ दिखाना है। वे ही इस जटिल दौर में समाधान प्रस्तुत कर सकती हैं।

प्रश्न 2.2: वर्तमान चिंतन और प्रचलन में विकृतियाँ क्या हैं और उनके कारण समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर 2.2: वर्तमान चिंतन और प्रचलन में अस्वस्थता, उद्विग्नता, आक्रामकता, निष्ठुरता, स्वार्थान्धता, संकीर्णता और उद्दण्डता जैसी विकृतियाँ व्याप्त हैं। मानवीय मर्यादाओं का उल्लंघन हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति और समाज दोनों को अनेक संकटों और समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कोई भी सुखी या संतुष्ट नहीं दिखता, बल्कि अभाव, जनसंख्या वृद्धि और आतंक से विक्षुब्ध प्रतीत होता है।

प्रश्न 2.3: बड़े युद्धों और सृजनात्मक कार्यों के लिए किस प्रकार की प्रतिभाओं की आवश्यकता होती है?

उत्तर 2.3: बड़े युद्धों को जीतने और बड़े सृजनात्मक कार्यों, जैसे ताजमहल या चीन की दीवार बनाने के लिए विशिष्टतायुक्त प्रतिभाएँ चाहिए। वरिष्ठ सेनानायकों की रणनीति और सूझ-बूझ युद्धों में सफलता दिलाती है, और बड़े निर्माणों के लिए भी अनुभवी लोगों की नीति तथा आवश्यक साधन जुटाने की क्षमता आवश्यक होती है। बड़ी प्रतिभाएँ ही बड़ी योजनाएँ बनाती हैं और भारी-भरकम दायित्व उठाती हैं।

प्रश्न 2.4: इक्कीसवीं सदी को दूरदर्शी लोग किस रूप में देखते हैं और इसमें प्रतिभाओं का क्या योगदान है?

उत्तर 2.4: दूरदर्शी लोग इक्कीसवीं सदी को सर्वतोमुखी प्रगति और सतयुग की वापसी की संभावनाओं से भरा-पूरा मानते हैं। इस अवधि में समर्थ प्रतिभाओं का सृजन, उन्नयन और प्रखरीकरण तेजी से हो रहा है, जिसमें संभवतः अदृश्य शक्ति का भी हाथ है। तेजस्वी प्रतिभाएँ ही भौतिक समृद्धि बढ़ाने, प्रगति का वातावरण उत्पन्न करने और वर्तमान के अंधकार को उज्ज्वल भविष्य में बदलने का श्रेय प्राप्त करती हैं।

प्रश्न 2.5: नवयुग के अवतरण के लिए कौन से दो महत्वपूर्ण कार्यक्रम बताए गए हैं?

उत्तर 2.5: नवयुग के अवतरण के लिए दो महत्वपूर्ण कार्यक्रम बताए गए हैं। पहला है आदर्शवादी सहायकों में उमंगें उभारना और उन्हें 'एक परिसर-एक सूत्र' में जोड़ना, साथ ही सद्विचारों को सद्कार्यों में बदलने वाली सृजनात्मक गतिविधियाँ शुरू करना। दूसरा कार्य अनीति के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करना, उसे एक प्रयास से विशाल बनाना और दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन करना है। यह अग्रगमन ही उज्ज्वल भविष्य और चिरस्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त करेगा।

प्रश्न 2.6: प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें जाज्वल्यमान बनाने के लिए क्या करना आवश्यक है?

उत्तर 2.6: प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें जाज्वल्यमान बनाने के लिए उन्हें प्रयत्नपूर्वक खोजा जाता है और ऐसे कार्यों में लगाया जाता है जो उनके ओजस्, तेजस् और वर्चस् को प्रखर कर सकें। जैसे विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा का कार्य सौंपा था, उसी प्रकार प्रतिभाओं को भी अग्निपरीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। प्रशिक्षण और परिवर्धन के माध्यम से आदर्शवादी गतिविधियों में भूमिका निभाना आवश्यक है, क्योंकि

पराक्रम से बचने वाले महानता प्राप्त नहीं कर सकते।

अध्याय 3: प्रतिभा परिवर्धन के तथ्य और सिद्धान्त

प्रश्न 3.1: प्रतिभा को किस प्रकार की सम्पदा कहा गया है और इसका क्या महत्व है?

उत्तर 3.1: प्रतिभा को **स्व-उपार्जित सम्पदा** कहा गया है, जो जन्मजात उपलब्धि या वरदान नहीं है। यह धन, रूप या विद्या की तरह क्षणभंगुर नहीं, बल्कि हर स्थिति में व्यक्ति के साथ रहती है। प्रतिभा अपनी और दूसरों की गुत्थियाँ सुलझाती है, जन्म-जन्मांतरों तक साथ रहकर उच्चस्तरीय परिस्थितियों का निर्माण करती है। इसे हर दृष्टि से सराहा जा सकता है और स्वर्ण सम्पदा की तरह उपयोग किया जा सकता है।

प्रश्न 3.2: प्रतिभा परिष्कार का प्रथम सिद्धांत क्या है और 'महाजागरण' किसे कहते हैं?

उत्तर 3.2: प्रतिभा परिष्कार का प्रथम सिद्धांत **क्षमताओं का अभिवर्धन** है, जिसके लिए निरंतर तत्परता और तन्मयता का सुनियोजन आवश्यक है। आलस्य-प्रमाद से बचकर जागरूक और स्फूर्तिवान बने रहना, तथा हर क्षण को बहुमूल्य मानकर सदुद्देश्यों में नियोजित करना ही '**महाजागरण**' है। प्रतिभा के उपासक इस दलदल से उबरकर अपनी क्षमताओं को मूल्यवान पूँजी की तरह एकत्रित करते हैं और उनका श्रेष्ठतम उपयोग करते हैं।

प्रश्न 3.3: व्यक्तित्व को चुंबकीय और आकर्षक कैसे बनाया जा सकता है, जो प्रतिभा परिवर्धन का दूसरा चरण है?

उत्तर 3.3: व्यक्तित्व को चुंबकीय, आकर्षक और विश्वसनीय बनाने के लिए जागरूक, जिम्मेदार और सज्जनता से भरपूर लोगों जैसा रहन-सहन अपनाना पड़ता है। शरीर और मन की स्वच्छता, शिष्टाचार का पालन, और वाणी में मधुरता आवश्यक है। दूसरों के गुणों से प्रेरणा लेना और अपनी त्रुटियों को सुधारना भी महत्वपूर्ण है। प्रतिभावान व्यक्ति संतुष्ट और प्रसन्न दिखते हैं, जबकि ओछे लोग शेखी बघारते और दूसरों के दोष गिनाते रहते हैं।

प्रश्न 3.4: प्रतिभा परिवर्धन में 'सुव्यवस्था' का क्या महत्व है और यह कैसे प्राप्त की जाती है?

उत्तर 3.4: सुव्यवस्था प्रतिभा परिवर्धन का तीसरा चरण है। अस्त-व्यस्त स्थिति में साधन प्रचुर होने पर भी लोग असफल रहते हैं। प्रतिभावान व्यक्ति अपने कार्यों और योजनाओं की निरंतर समीक्षा करते हैं और सुधार के लिए आवश्यक परिवर्तन बिना हिचक करते हैं। वे जड़ता और हठवादिता से दूर रहकर परिस्थितियों के अनुरूप रणनीति बनाते हैं। समय, श्रम, साधन और विचारों का सुनियोजन करने वाला व्यक्ति ही बड़ी जिम्मेदारियों के योग्य माना जाता है।

प्रश्न 3.5: प्रतिभाओं में 'अग्रगमन-नेतृत्व' का गुण कैसे विकसित होता है और यह उन्हें कैसे अलग करता है?

उत्तर 3.5: अग्रगमन-नेतृत्व प्रतिभा परिवर्धन का चौथा और अंतिम सूत्र है, जो उत्साह, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक है। साधारण लोग झिझक और साहसहीनता से ग्रस्त रहते हैं, जबकि मनस्वी व्यक्ति उचित के प्रति अटूट आस्था रखते हैं। वे दूसरों का समर्थन न मिलने पर भी सही कार्य को अकेले कर दिखाते हैं। रेल के इंजन की तरह, प्रतिभाएँ अकेले आगे बढ़कर दूसरों को भी अपने साथ जोड़ती हैं, जिससे सफलता प्राप्त होती है।

प्रश्न 3.6: क्या प्रतिभा का दुरुपयोग भी संभव है? यदि हाँ, तो उसके क्या परिणाम होते हैं?

उत्तर 3.6: हाँ, प्रतिभा का दुरुपयोग भी संभव है, जैसे धन, बल या कौशल का उपयोग भ्रष्ट चिंतन और दुष्ट आचरण में किया जाए। आतंकवादी और अनाचारी लोग प्रायः ऐसा करते हैं। हालाँकि, इस आधार पर न तो

स्थिर प्रगति मिल सकती है और न ही सराहनीय परम्परा छोड़ी जा सकती है। ऐसे लोग अंततः आत्मप्रताड़ना, लोकभर्त्सना, राजदंड और दैवी प्रकोप के भागी बनते हैं।

अध्याय 4: युगसृजन के निमित्त प्रतिभाओं को चुनौती

प्रश्न 4.1: वर्तमान समय को 'संधिकाल' क्यों कहा गया है और इस अवसर पर भावनाशील लोगों को क्या करना चाहिए?

उत्तर 4.1: वर्तमान समय को 'संधिकाल' या 'युगसन्धि का समय' कहा गया है क्योंकि यह आपत्तिकाल के समान है, जहाँ व्यापक अवांछनीयताएँ और नवनिर्माण दोनों एक साथ मौजूद हैं। अग्रिकांड या महामारी जैसे अवसरों पर उदार सेवाभावना की परीक्षा होती है। भावनाशील लोग ऐसे अवसर चूकते नहीं, बल्कि सेवा साधना में जुटकर अपनी महानता की छाप छोड़ते हैं, जिससे उन्हें भविष्य में भी महत्वपूर्ण वरिष्ठता मिलती है।

प्रश्न 4.2: 'हर घर से एक प्रतिभा' की आवश्यकता क्यों महसूस की जा रही है?

उत्तर 4.2: 'हर घर से एक प्रतिभा' की आवश्यकता इसलिए महसूस की जा रही है क्योंकि आज की विपन्नता त्रेता युग या महाभारत काल से कम नहीं है। इक्कीसवीं सदी में सतयुग की वापसी की स्पष्ट संभावनाएँ हैं, और इस नवसृजन में संलग्न होने के लिए परिवारों को एक सदस्य को आगे बढ़ाना चाहिए। ऐसे व्यक्ति लोक निर्वाह में कटौती करके अपनी संवेदनाओं और गतिविधियों को सृजन के लिए समर्पित करते हैं, जो अंधकार में मशाल का काम करता है।

प्रश्न 4.3: आदर्शवादी साहस से व्यक्ति को क्या प्राप्त होता है?

उत्तर 4.3: आदर्शवादी साहस से व्यक्ति को ऐसा प्रामाणिक, प्रखर और प्रतिभावान व्यक्तित्व प्राप्त होता है, जिसे दैवी सम्पदा के रूप में आँका जा सकता है। इस उपलब्धि पर आज की भौतिक सम्पदाओं को भी न्योछावर किया जा सकता है। धनाढ्य या विद्वान केवल कुछ लोगों पर अपनी धाक जमा पाते हैं, जबकि महामानव स्तर की प्रतिभाएँ इतिहास और समस्त मानव जाति को कृतकृत्य करती हैं।

प्रश्न 4.4: युगसृजन को 'असाधारण दुस्साहस भरा प्रयत्न' क्यों कहा गया है?

उत्तर 4.4: युगसृजन को 'असाधारण दुस्साहस भरा प्रयत्न' इसलिए कहा गया है क्योंकि इसका संबंध किसी व्यक्ति या देश से नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में आमूल-चूल परिवर्तन करने से है। पतनोन्मुख प्रवृत्तियों को रोकना और उत्कृष्टता की दिशा में उछाल देना बहुत कठिन कार्य है, जो कैंसर के मरीज को रोगमुक्त कर पहलवान बनाने जैसा है। यह प्रक्रिया सार्वभौम बनाने के लिए अत्यंत दुरूह है।

प्रश्न 4.5: आत्मबल बढ़ाने के लिए उपासना को क्या माना जाता है, और आत्मशक्ति जागने पर क्या अनुभव होता है?

उत्तर 4.5: आत्मबल बढ़ाने के लिए उपासना को सब कुछ माना जाता है, जिससे मनोकामनाओं की पूर्ति और स्वर्ग-मुक्ति की अपेक्षा की जाती है। लोग देवताओं से दर्शन और ऋद्धि-सिद्धियों की आशा करते हैं। लेकिन, जब आत्मशक्ति जागती है, तो उसका अनुभव आदर्शवादी प्रतिभा में होता है। यह प्रतिभा ध्वंस से निपटने और सृजन को चरितार्थ करने की सामर्थ्य प्रदान करती है, जिसे दैवी वरदान या सिद्ध पुरुषों का अनुदान कहा जा सकता है।

प्रश्न 4.6: प्राचीन काल में ऋषि कैसे जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते थे?

उत्तर 4.6: प्राचीन काल में ऋषि जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते थे, जो उच्च आदर्शों के अनुरूप स्वयं के आचरण बनाने-ढालने के कष्टसाध्य क्रम को **तपश्चर्या** कहते थे। वशिष्ठ, विश्वामित्र, चरक और याज्ञवल्क्य जैसे सभी ऋषियों ने नई शोध की, उसे स्वयं पर परखा और उसकी प्रामाणिकता सिद्ध करके समाज को लाभान्वित किया। बुद्ध और गाँधी जैसे महामानव भी इसी प्रक्रिया से अवतार और राष्ट्रपिता कहलाए।

अध्याय 5: प्रतिभा सम्बर्धन का मूल्य भी चुकाया जाए

प्रश्न 5.1: गाँधी युग के सत्याग्रहियों को किन लाभों से गौरवान्वित किया गया और क्यों?

उत्तर 5.1: गाँधी युग के सत्याग्रहियों को स्वतंत्रता सेनानी कहलाने का गौरव मिला, और वे यशस्वी बने। उन्हें ताम्रपत्र, पेंशन और आवागमन के मुफ्त पास जैसे लाभों से गौरवान्वित किया गया। जो उनमें वरिष्ठ और विशिष्ट थे, वे देश का शासन सूत्र संचालन करने वाले मूर्द्धन्य बने। यह सब उनकी प्रचण्ड प्रतिभा का प्रतिफल था, क्योंकि उन्होंने स्वार्थपरता छोड़कर देश सेवा को चुना था।

प्रश्न 5.2: उन लोगों को भाग्यवान क्यों कहा गया है जिन्होंने आदर्शों के साथ रिश्ता जोड़ा?

उत्तर 5.2: उन लोगों को भाग्यवान कहा गया है जिन्होंने आदर्शों के साथ रिश्ता जोड़ा और महानता का मार्ग अपनाया। उन्होंने ऐसा कुछ कर दिखाया, जिसका अनुकरण करते हुए असंख्यों को गौरव और गरिमा का लक्ष्य प्राप्त होता है। यह मूर्खता और बुद्धिमत्ता के चयन के चौराहे पर सही निर्णय करने जैसा है, जैसा अवसर भगीरथ और अर्जुन ने अपनी साहसिकता के बदले खरीदा था। वरदान पात्रता से ही मिलते हैं।

प्रश्न 5.3: 'युगसन्धि का प्रभात पर्व' किस बात की आवश्यकता पर बल देता है?

उत्तर 5.3: 'युगसन्धि का प्रभात पर्व' इस बात पर बल देता है कि महाकाल को प्राणवान प्रतिभाओं की असाधारण आवश्यकता है। दैवी प्रयोजन महामानवों के माध्यम से ही क्रियान्वित होते हैं, अदृश्य शक्तियाँ केवल प्रेरणा भरती हैं। यह व्यक्ति का स्वतंत्र निर्धारण है कि वह इस अवसर को अपनाए या ठुकराए। यह काल युग की विकृतियों का शमन और नवसृजन के महायज्ञ को प्रज्वलित करने का समय है, जिससे सतयुग की वापसी हो सके।

प्रश्न 5.4: महाकाल द्वारा 'प्रज्ञा-परिजनों' को भेजे गए आमंत्रण का क्या महत्व है?

उत्तर 5.4: महाकाल द्वारा प्रज्ञा-परिजनों को भेजे गए आमंत्रण का महत्व यह है कि यह किसी समर्थ सत्ता द्वारा अपने सहायक के रूप में बुलाए जाने जैसा है। जैसे राम स्वयं सुग्रीव-हनुमान के पास गए थे या रामकृष्ण परमहंस विवेकानंद के घर, वैसे ही यह आमंत्रण सुनिश्चित संभावनाओं में भागीदार बनकर अजस्र सौभाग्य प्रदान करने के लिए चुना गया है। इसकी उपेक्षा करना अदूरदर्शी और हतभागियों का कार्य होगा।

प्रश्न 5.5: व्यक्ति और समाज का संबंध पानी और मछली जैसा अविच्छिन्न क्यों हो गया है?

उत्तर 5.5: व्यक्ति और समाज का संबंध पानी और मछली जैसा अविच्छिन्न हो गया है क्योंकि अब कोई निजी उन्नति या सुविधा से अकेले सुखी नहीं रह सकता। यदि संबद्ध वातावरण विपन्न है, तो सज्जन व्यक्ति की शांति भी सुरक्षित नहीं रह सकती। अग्रिकांड या गुंडागर्दी एक घर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पूरे क्षेत्र को प्रभावित करती है। इसलिए, जनमानस के गिरे हुए स्तर को उभारना अपनी और अपने परिकर की सुरक्षा के समान है।

प्रश्न 5.6: प्रतिभा संपादन के लिए किस प्राथमिक कक्षा में पढ़े बिना काम नहीं चलता और इसमें कौन से तत्व प्रमुख हैं?

उत्तर 5.6: प्रतिभा संपादन के लिए जिस प्राथमिक कक्षा में पढ़े बिना काम नहीं चलता, वह है सेवासाधना। उच्चस्तरीय सेवासाधना में दो ही तत्व प्रमुख हैं: पहला सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन और दूसरा दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन। इन प्रयासों को अपनाने के लिए अपने समय और साधनों का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहने का महत्व समझना चाहिए। यह प्रतिभा परिवर्धन की अनिवार्य फीस मानकर चलना चाहिए, जिससे युग परिवर्तन संभव होगा।

अध्याय 6: प्रतिभा के बीजांकुर हर किसी में विद्यमान हैं

प्रश्न 6.1: मानवी सत्ता के भीतर छिपी ऊर्जा और शक्ति का वर्णन करें।

उत्तर 6.1: मानवी सत्ता के भीतर एक गहरी ऊर्जा और शक्ति छिपी है। हृदय का रक्त संचार, माँसपेशियों का आकुंचन-प्रकुंचन, श्वास-प्रश्वास जैसी भीतरी हरकतें अरबों-खरबों जीवकोषों की क्रियाशीलता से उत्पन्न होती हैं। ये कोशिकाएँ विद्युत प्रवाह के उद्गम स्रोत का काम करती हैं, जो अखिल ब्रह्मांड में व्याप्त महाऊर्जा से संबंध जोड़कर शक्ति ग्रहण करती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, यदि शरीर की बिजली एकत्रित की जाए तो उसकी शक्ति किसी विशालकाय बिजलीघर से कम न होगी।

प्रश्न 6.2: मनुष्य अपने भीतर की असीमित शक्ति का कितना अंश उपयोग करता है और क्यों?

उत्तर 6.2: मनुष्य अपने भीतर की असीमित शक्ति का बहुत छोटा अंश ही उपयोग करता है, जिससे केवल हलकी-फुलकी दिनचर्या चलती रहे। आजीविका, निद्रा-जागृति और छोटे-मोटे काम ही इससे सम्पन्न हो पाते हैं। जिन क्षमताओं का उपयोग नहीं हो पाता, वे निष्क्रिय होकर प्रसुप्त स्थिति में चली जाती हैं, मानो मूर्च्छित होकर किसी कोने में छिपी पड़ी हों। यह सीमित इच्छाओं और आकांक्षाओं के कारण होता है।

प्रश्न 6.3: प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत करके बड़े काम कैसे किए जा सकते हैं?

उत्तर 6.3: प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत करके बड़े काम किए जा सकते हैं। यह उन लोगों के लिए एक ही उपाय है जिन्हें कोई महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करना है। अभ्यास के बलबूते पर ये शक्तियाँ बड़े लाभ अर्जित करने में सहायक होती हैं। अपनी आंतरिक पुरुषार्थ को जगाना चाहिए, क्योंकि जब फूल खिलते हैं तो तितलियाँ और भौरे स्वतः ही मंडराने लगते हैं। दूसरों की सहायता पर अत्यधिक महत्व नहीं देना चाहिए।

प्रश्न 6.4: अध्यात्म दर्शन 'अपने को जानो' का क्या महत्व बताता है?

उत्तर 6.4: अध्यात्म दर्शन का सार निष्कर्ष 'अपने को जानो' (आत्मानं विद्धि) है। इसका महत्व यह है कि व्यक्ति को पहले स्वयं को विकसित करना चाहिए और एक उच्च लक्ष्य की ओर ले जाने वाले मार्ग पर चलना चाहिए। यह स्वयं के लिए शिक्षा है, जिसे स्वीकार करने के बाद ही दूसरों से समर्थन, सहायता या अनुदान पाने की आशा की जा सकती है। देवता भी तपस्वियों को ही वरदान देते हैं, भिखारियों को नहीं।

प्रश्न 6.5: प्रतिभा परिष्कार की आरंभिक शर्त क्या है और इसमें किन मानसिक दुर्गुणों से लड़ना पड़ता है?

उत्तर 6.5: प्रतिभा परिष्कार की आरंभिक शर्त है अपने आपसे जूझना। इसके लिए सबसे पहले आलस्य और प्रमाद से लड़ना पड़ता है, और उनकी जगह चुस्त-दुरुस्त रहने की जागरूकता को धारण करना पड़ता है। इसके साथ ही, निराशा, अनुत्साह, चिंता और खिन्नता जैसे मानसिक दुर्गुणों से तब तक संघर्ष करना चाहिए, जब तक कि उनके स्थान पर आशा, प्रसन्नता, उमंग और निर्भयता जैसी सत्प्रवृत्तियाँ स्थापित न हो जाएँ।

प्रश्न 6.6: प्रतिभा को 'त्रिवेणी' क्यों कहा गया है और इसके कौन से तीन स्तर हैं?

उत्तर 6.6: प्रतिभा को 'त्रिवेणी' की तरह कहा गया है क्योंकि इसमें तीन स्तरों को जगाना, उभारना और प्रखरता संपन्न बनाना पड़ता है। ये तीन स्तर हैं: शारीरिक ओजस्, मानसिक तेजस् और अंतरात्मा में सन्निहित वर्चस्। संयम से शारीरिक ओजस्, उपयुक्त काम में रुचि और एकाग्रता से मानसिक तेजस्, और सदाशयता पर सघन श्रद्धा से वर्चस् प्राप्त होता है। यह दिव्यता का अंश जिसके हाथ लगता है, वह धन्य हो जाता है।

अध्याय 7: उत्कृष्टता के साथ जुड़ें, प्रतिभा के अनुदान पाएँ

प्रश्न 7.1: बड़े कामों के लिए 'वरिष्ठ प्रतिभाओं' की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर 7.1: बड़े कामों के लिए 'वरिष्ठ प्रतिभाओं' की आवश्यकता होती है क्योंकि मजबूत किलों को तोड़ने, पहाड़ों को समतल करने, या रेल के डिब्बे उठाने जैसे कार्यों के लिए असाधारण शक्ति और विशेषज्ञता चाहिए। छोटे साधन इन कार्यों में निरर्थक होते हैं। दलदल में फंसे हाथी को निकालने या नए नगरों के नक्शे बनाने के लिए भी बड़े आकार वाले गजराज या सूझ-बूझ वाले इंजीनियरों की आवश्यकता होती है। टट्टुओं से हाथी वाली अंबारी नहीं रखी जा सकती।

प्रश्न 7.2: वर्तमान समय की चुनौती क्या है और इसे पूरा करने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर 7.2: वर्तमान समय की चुनौती अनौचित्य की बाढ़ को रोकना, दलदल को मधुवन बनाना, विनाश के तांडव को रोकना और विकास का उल्लास भरा सरंजाम जुटाना है। यह खाई को पाटने और उस पर ऊंची मीनार खड़ी करने जैसा दोहरा पराक्रम है। इस प्रवाह को पलटना ही नहीं, बल्कि उलटे को सीधा करना भी आवश्यक है। इसके लिए दृढ़ संकल्प और अपनी क्षमता को सिद्ध करके दिखाना आवश्यक है, जो युग परिवर्तन की इस विषम वेला की मांग है।

प्रश्न 7.3: संसार भर में फैली 'विचार विकृति' का परिशोधन किस प्रकार किया जा सकता है?

उत्तर 7.3: संसार भर में फैली 'विचार विकृति' का परिशोधन लेखनी, वाणी और प्रचार माध्यमों से एक सीमा तक ही हो सकता है, लेकिन धीमी गति से। मुख्य चुनौती यह है कि लोकचिंतन में घुसी भ्रष्टता से कैसे निपटा जाए और दुराचरण के उद्गम को कैसे बंद किया जाए। उपाय एक ही शेष रहता है: ऐसी प्रतिभाएँ नए सिरे से उभरें, जो अपना आदर्श प्रस्तुत करते हुए सिद्ध करें कि सही मार्ग पर चलना न तो घाटे का सौदा है, न असंभव।

प्रश्न 7.4: प्रतिभाओं को किन दोहरे मोर्चे पर लड़ने का अभ्यास करना चाहिए?

उत्तर 7.4: प्रतिभाओं को दोहरे मोर्चे पर लड़ने का अभ्यास करना चाहिए। उनमें से एक है दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन और दूसरा है सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन। इन प्रयासों का शुभारम्भ अपने निजी जीवन से करके परिवार में, फिर पड़ोसियों, स्वजन-संबंधियों और परिचितों तक फैलाया जा सकता है। अपनी आदतों में छिपी कमियों, विशेषकर आलस्य और कामचोरी, से निपटने के लिए यहीं से मोर्चाबंदी शुरू करनी चाहिए।

प्रश्न 7.5: 'पसीने की हर बूँद मोती होती है' इस कथन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर 7.5: 'पसीने की हर बूँद मोती होती है' का तात्पर्य है कि श्रम और समय का सदुपयोग अत्यंत मूल्यवान है। जीवन के बहुमूल्य क्षणों का श्रेष्ठतम और क्रमबद्ध उपयोग करने वाले ही समुन्नत होते हैं। आलस्य और प्रमाद में समय गँवाने वाले जीवन भर अनुपयोगी और अयोग्य बने रहते हैं। निरंतर व्यस्तता और अपने दायित्वों की क्रमबद्ध व्यवस्था बनाना दूरदर्शिता, विवेकशीलता और कार्यकुशलता का प्रमाण है।

प्रश्न 7.6: प्रतिभाशाली व्यक्ति नेतृत्व के अधिकारी कैसे बनते हैं?

उत्तर 7.6: प्रतिभाशाली व्यक्ति नेतृत्व के अधिकारी तब बनते हैं जब वे अपने हिस्से के काम के साथ-साथ संबद्ध क्षेत्र के हर उतार-चढ़ाव का ध्यान रखते हैं और सुधार के लिए नम्रतापूर्वक परामर्श देते हैं। वे अहंकारी

नहीं होते और अपने प्रस्तावों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि दूसरों के स्वाभिमान को चोट न पहुँचे। पूर्ण दिलचस्पी, एकाग्र मनोयोग, उचित उत्साह और आगे बढ़ने का अदम्य साहस मिलकर उन्हें ऐसी स्थिति में लाते हैं, जहाँ वे बड़े काम साध सकें और परिस्थितियों की प्रतिकूलता से भयभीत न हों।

प्रश्न 7.7: इक्कीसवीं सदी को प्रतिभावानों की क्रीडास्थली क्यों कहा गया है?

उत्तर 7.7: इक्कीसवीं सदी को प्रतिभावानों की क्रीडास्थली कहा गया है क्योंकि यह समय परिवर्तन की वेला है, जहाँ नवयुग के अरुणोदय में अधिक विलम्ब नहीं है। जनमानस वर्तमान अवांछनीयताओं से ऊब चुका है और मुक्ति की दिशा खोज रहा है। दिव्यदर्शी मानते हैं कि नियति सदाशयता की ज्ञानगंगा का अवतरण करने जा रही है। इस अनुकूल वातावरण में प्रतिभावान लोग असाध्य कार्यों को भी संभव कर दिखाएंगे, जिससे उन्हें उत्कर्ष और अभ्युदय का श्रेय मिलेगा।

प्रश्न 7.8: प्रतिभा परिवर्धन का अजस्र लाभ उठाने के लिए क्या स्वर्ण सुयोग आया है?

उत्तर 7.8: प्रतिभा परिवर्धन का अजस्र लाभ उठाने के लिए 'युगसन्धि की वेला' का स्वर्ण सुयोग आया है। इस समय जीवट वाले प्राणवानों की आवश्यकता है जो अवांछनीयताओं से जूझ सकें। हनुमान और अंगद जैसे पराक्रमी, भले ही अनगढ़ हों, लंका को धराशायी कर रामराज्य स्थापित करने जैसे दोहरे मोर्चों पर अपनी क्षमता का परिचय देते हैं। जो समय को पहचानते हैं और साहस दिखाते हैं, उन्हें प्रतिभा का धनी बनने के लिए अतिरिक्त अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं पड़ती; संयम और साहस का मिलन ही वरिष्ठता तक पहुँचा देता है।